धर्म का स्वरूप

-प्रो. वीरसागर जैन

वस्तु का स्वरूप समझने के लिए द्रव्य, गुण और पर्याय को तो जानना ही चाहिए, परन्तु इनके अतिरिक्त अनन्त धर्म भी वस्तु में बतलाए गए हैं, उन्हें भी समझना अत्यंत आवश्यक है, जो कि प्रायः लोग नहीं समझते हैं, अतः यहाँ धर्म का स्वरूप समझने का प्रयास करते हैं |

धर्म का स्वरूप समझने से पहले यहाँ एक बात भलीभांति समझ लेनी चाहिए कि 'धर्म' शब्द के अनेक अर्थ लोक और शास्त्र में प्रसिद्ध हैं | यथा-

1. शुद्धोपयोग | (धर्मः शुद्धोपयोगः स्यात्)
2. मत, सम्प्रदाय |
3. कर्तव्य | (कर्तव्यमेव धर्मः)
4. वस्तु का स्वभाव (वत्थु सहावो धम्मो)
5. धर्म द्रव्य |

किन्तु यहाँ उक्त पाँचों में से कोई भी अर्थ नहीं है | यहाँ तो उन सबसे अलग ही एक विशेष अर्थ है, जिसकी चर्चा मुख्यतः अनेकान्त-स्याद्वाद सिद्धांत को समझते समय होती है | कहा जाता है कि वस्तु में अनन्त धर्म रहते हैं और वे सभी प्रायः अपने प्रतिपक्ष के साथ रहते हैं | जैसे कि अस्तित्व-नास्तित्व, एकत्व-अनेकत्व, नित्यत्व-अनित्यत्व, भिन्नत्व-अभिन्नत्व, चेतनत्व-अचेतनत्व आदि |

प्रत्येक वस्तु में पाए जानेवाले ये धर्म या धर्मयुगल वस्तु के कोई वैसे गुण नहीं हैं जैसे कि ज्ञान आदि होते हैं, अपितु वस्तु को भलीभांति समझने के विविध आयाम हैं, पक्ष हैं, स्थितियाँ हैं |

प्रत्येक वस्तु में ऐसे अनन्त धर्म, आयाम, पक्ष या स्थितियाँ पाई जाती हैं | यद्यपि अनेक बार हम इन्हें गुणों की भाषा में भी समझते-समझाते हैं, पर वास्तव में ये गुण नहीं हैं | गुण और धर्म में बड़ा अंतर होता है | गुणों की पर्यायें होती हैं, धर्मों की नहीं; धर्म सापेक्ष होते हैं, गुण नहीं; इत्यादि |

अनेक बार गुण भी 'त्व' प्रत्यय लगाने से धर्म के बोधक बन जाते हैं, पर फिर भी गुण धर्म नहीं बन जाता है; गुण गुण ही रहता है और धर्म धर्म ही | जैसे कि चेतन गुण और चेतनत्व धर्म दोनों अलग-अलग हैं | चेतनत्व धर्म अपने प्रतिपक्ष अचेतनत्व धर्म के साथ ही पाया जाता है, पर चेतन गुण अचेतन गुण के साथ नहीं रहता है |

अनेक धर्म परवस्तुओं की सापेक्षता से भी समझ में आते हैं, जैसे कि निकटत्व-दूरत्व, लघुत्व-गुरुत्व आदि, परन्तु इन्हें असद्भूत या काल्पनिक नहीं समझना चाहिए | ये भी वस्तु के सत्य (विद्यमान) धर्म, आयाम या पक्ष हैं | इनके वस्तु के स्वरूप होने में किंचित् भी सन्देह नहीं है | ये तो केवल हमें समझने के लिए परवस्तुओं की अपेक्षा से उनको समझाया जाता है, पर इससे उन वस्तुधर्मों को पराधीन नहीं समझना चाहिए, वस्तुधर्म तो स्वाधीन ही हैं |